अमृतकुंभ

श्री राम नाईक जी के अमृत महोत्सव मनाने की जब चर्चा शुरू हुई तब कइयों को आश्चर्य हुआ कि, क्या रामभाऊ 75 वर्ष के हो गये !! जानलेवा बीमारी कैंसर के साथ संघर्ष कर पुनर्जन्म पानेवाले, निरंतर कार्यरत, अथक परिश्रमी, पार्टी के लिए पूरे महाराष्ट्र में ही नहीं, देशभर में प्रवास करनेवाले सहयात्री रामभाऊ को, हम सब ने नजदीक से देखा है.

नेता और कार्यकर्ता दोनों की भूमिका निभानेवाले, हर आंदोलन में सहभागी, जनसेवाव्रती, अंत्योदय के लिए निरंतर संघर्ष करनेवाले रामभाऊ एक अलग ही मिट्टी के बने हैं. राजनीतिक नेता का अपने कार्यकर्ताओं के साथ व्यवहार कैसा होना चाहिए, नेता, दल तथा जनता के बीच संबंध कैसे होने चाहिए, इसके एक जीते-जागते आदर्श के रूप में भी रामभाऊ का उदाहरण हमारे सामने है. इसको जनता के समक्ष रखने का यह सुखद संयोग, इस अमृत महोत्सव के निमित्त, हम सब को प्राप्त हुआ है.

अत: श्री. रामभाऊ का यह अमृत महोत्सव समाज के लिए, पार्टी के लिए एवं कार्यकर्ताओं के लिए भी एक शुभ पर्व के समान है. इस पावन अवसर के बहाने उनके आदर्शों को, पक्ष - निष्ठा को, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भावना को एवं समर्पित भाव से समाज सेवा करने की लगन को 'आम' जनता के सामने प्रस्तुत करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है. मैं इस अमृत महोत्सव को दो दृष्टिकोणों से देख रही हूँ - एक व्यक्तिगत और दूसरा सार्वजनिक. इन दोनों ही दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर एवं समय की मांग को समझकर, उनके विषय में एक ग्रंथ प्रकाशित करने का हम सबने निर्णय किया.

वैसे देखा जाए तो मेरी और रामभाऊ की राजनीतिक यात्रा साथ साथ चलती रही है. चुनाव लड़ना, जीतना, हारना, इस संदर्भ में, मैंने, रामभाऊ की अपेक्षा पराजय का ज्यादा अनुभव किया है. करीब करीब 30-35 वर्षों से रामभाऊ उत्तर मुंबई और मैं दक्षिण मुंबई, मुंबई महानगर के इन दो छोरों का हम प्रतिनिधित्व करते हुए पक्ष-निष्ठा, कर्तव्य भावना, एवं समर्पित भावना से जनसेवा करते रहे हैं.

समय तेजी से बदलता जा रहा है और उसी के साथ आज गिरावट आयी है राजनैतिक मूल्यों में भी. राजनैतिक दल, दलों के नेता, एवं कार्यकर्ताओं के दृष्टिकोण में भी आज परिवर्तन देखने को मिलता है. किन्तु समय के प्रवाह के साथ साथ अपने राजनैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए अपनी कर्तव्य भावना एवं निष्ठाओं पर अटल रहते हुए, आज तक जनसेवा करनेवाले रामभाऊ, हमारी पीढ़ी के सच्चे प्रतिनिधि रहे हैं.

भारतीय जनसंघ से भारतीय जनता पार्टी तक की हमारी इस यात्रा का अब करीब करीब अर्धशतक बीत चुका है. हमने अनेक राजनैतिक उतार-चढाव देखे हैं. किन्तु राजनैतिक सहिष्णुता एवं द्वेषरहित उदार राजनीति का दर्शन अगर हमें होता है, तो वह रामभाऊ के जीवन